ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

भगवानों की भी हुई , अब तो भीड़ अपार '

मन्दिर से लेकर चले , जीने का वरदान ।
आकर वाहन से भिड़े , गये वहीं पर प्राण ।।-1

दादी , नानी के फले , आधे ही आशीष ।
दूध कहीं मिलता नहीं , पूत हुए दस-बीस ।।-2

श्रद्धा से था खा लिया , माथे लगा प्रसाद ।
अस्पताल पहुंचा दिए , ज़रा देर के बाद ।।-3

बातें गढ़ छकते रहे , निशि-दिन पंडित माल ।
जितना मोटा पेट है , उतनी मोटी खाल ।।-4

फटेहाल हैं ज्योतिषी , पेड़ तले दूकान ।
कहते हमसे आ मिलो , बन जाओ धनवान ।।-5

सूर्य , चन्द्र , नक्षत्र ग्रह , करते अपना काम ।
हम पूजा में मग्न कब , सीखा करना काम ।।-6

भगवानों की भी हुई , अब तो भीड़ अपार ।
कौन असत् है कौन सत् , किसके जाएं द्वार ।।-7

भोंपू भी लगवा लिए , सज्जा की भरपूर ।
ढोल मँजीरे साथ हैं , भक्त बड़े ही शूर ।।-8

पूजा में बैठे रहें, घंटों वो सरकार ।
भूखे -प्यासे लोग हैं, दर पर करें पुकार ।।-9

यज्ञ हवन कर चाहते , बन जाएं सब काम ।
बुद्धि खर्च करते नहीं , दें तन को आराम ।।-10

हमदर्दी दिखला रहे , बातों में सब लोग ।
मन ही मन इठला रहे , देकर यह सहयोग ।।-11

तब तो यह आई नहीं , जब था इसका काम ।
अक्ल आज आई हमें , जब है उम्र तमाम ।।-12

नाम- डॉ. नलिन

जन्म - 18 जनवरी , सन् 1948
शिक्षा - ज . ला . नेहरू , आयुर्विज्ञान महाविद्यालय , अजमेर से चिकित्सा स्नातक
प्रकाशित पुस्तकें - एक गीत संग्रह , चार ग़ज़ल संग्रह , और दो कुण्डलिया संग्रह
देश की विभिन्न पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशन
सम्मान और उपाधियां - कई प्रतिष्ठित सम्मान और उपाधियां प्राप्त (सभी नि:शुल्क एवं अयाचित)
पता- डॉ. नलिन
4 , ई 6 तलवंडी कोटा (राजस्थान) पिन- 324005
मो०- 9413987457